भारत में आर्थिक सुधार /नई आर्थिक व्यवस्था
(Economic Reforms/New Economic Policy in India)

प्रथमतः गैट एग्रीमेंट के शर्तों के अनुसार पुरे विश्व में आर्थिक सुधार लाये गये तथा अंतराष्ट्रीय बाजार में राष्ट्रीय आर्थिक सीमाओं को मुक्त किया जाने लगा। फलस्वरूप भारत में भी नयी आर्थिक व्यवस्था अस्तित्व में आ गई। यद्यपि भारत में आर्थिक सुधारों के प्रयास 1986 में ही शुरू हो गये थे परन्तु वह सफल नहीं हो सका। पुनः 1991 में अंतराष्ट्रीय परिथितियों के अनुसार आवश्यक हो गया। वस्तुतः स्थिति यह हो गई कि जी.डी.पी. में संतोषजनक वृद्धि नहीं हो रही थी। उपर से सरकार के उपर कर्ज का भी बोझ था। सरकार को अंतराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं खासकार IMF की उदारीकरण के शर्तों को मानना आवश्यक हो गया था।

भारत में उदारीकरण की प्रक्रिया 1991 में प्रारंभ हुइ जिसमें भारत के लिए समाजवादी प्रवृतियों (जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र में अधिकाधिक धन लगाना) को छोड़ने की स्थिति बन गई। फलस्वरूप उदारीकरण एवं निजीकरण की प्रक्रिया शुरू करनी पड़ी और भूमण्डलीकरण की मांगों के साथ चलना पड़ा। उदारीकरण ने जहां एक ओर निजी क्षेत्र का प्रसार करके उसके आधार को मजबूत किया वहीं दूसरी ओर सरकार ने अपने नियंत्रण को ढ़ीला करना शुरू किया ताकि आर्थिक वृद्धि के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। भारत अब भूमण्डलीकरण को अपना चुका था।

इस प्रक्रिया में अनेक आर्थिक एवं प्रशासनिक सुधार किये गये। उन सुधारों को यहां हम संक्षेप में चर्चा करेंगे :–

1. आर्थिक एवं प्रशाकीय सुधार –

क. इसमें मुख्य कदम यह उठाया गया कि लोगों एवं व्यवसायिक कम्पनियों के करों में कमी की गई ताकि व्यापार एवं उत्पादन में वृद्धि हो सके।

ख. कर लगाने की सीमाओं को व्यापक किया गया।

ग. कल्याणकारी नीतियों के तहत दी जाने वाली सामाजिक सुरक्षा, सब्सिडी, छूटों या रियायतों में कमी की गई। अर्थात् बहुत सारी वस्तुओं पर दी जाने वाली सब्सिडी, राशन दुकानों से वितरित होने वाली चीनी, किरासन तेल आदि में दी जाने वाली रियायतें कम कर दी गईं। इतना ही नहीं सार्वजनिक वितरण प्रणाली में परिवर्तन कर सामान्य उपभोक्ताओं को दी जाने वाली खाद्य सामग्री को खत्म कर उसे अब लक्षित वर्गों तक सीमित कर दिया गया।

घ. कर, ड्यूटी, लाईसेंस, जैसे प्रावधानों को उदार किया गया तथा बाजार में मुक्तता की मात्रा बढ़ा दी गई। आयात–निर्यात के नियमों को ढ़ीला किया गया ताकि अंतराष्ट्रीय व्यवपार को बढ़ावा मिले और विदेशी पूंजी आ सके। इसी क्रम में अप्रवासी भारतीयों को निवेश के लिए प्रेरित किया गया।

2. वित्तीय क्षेत्र में सुधार :–

क. वित्तीय नीतियों के तहत ऋणोंमें ब्याज दरों में कमी की गइ। इतना ही नहीं निजी क्षेत्रों को वित्तीय सहायता देने एवं सुविधाएं प्रदान करने के उपाय कियो जाने लगे। इसी क्रम में सेफ इकॉनॉमिक जोन के तहत उद्योग लगाने के भूमि दिलाने की कवायत की गई।

ख. निजी कम्पनियों का वित्तीय विवरण देने संबंधी अनिवार्यता के कानूनों में ढ़ील देकर पेंचिदियों को कम किया गया।

ग. पूंजी बाजार व्यवस्था का सरलीकरण किया गया। इसी क्रम में आयात करों को भी कम कर दिया गया। व्यावपारिक सेवाओं को उदारीकरण, विशाल उद्योगों को पूर्ण स्वामित्व देना और अंतराष्ट्रीय बोद्धिक सम्पदा अधिकारों ;चंजपमदज त्पहीजेद्ध को मान्यता देना तथा इस संबंधमें राष्ट्रीय कानून में संशोधन करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम थें।

घ. अर्थ व्यवस्था में प्रतिस्पर्द्धा को प्रोतसाहन देना तथा लघु उद्योगों में आरक्षण को समाप्त करना।

3. नीतिगत सुधार :–

क. निजीकरण की नीति के तहत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण करना खासकर जो उपक्रम घाटे में जा रहें हों उन्हें निजी क्षेत्र को देना। इसके अलावा लोक उपक्रमों में कर्मचारियों की छंटनी कर आउट सोर्सिंग से काम करवाना तथा आरक्षण प्रावधानों को कम करना।

ख. सड़कों, यातायात के साधनों तथा इसी प्रकार के नागरिक सुविधाओं का निजीकरण करना।

ग. बड़े सरकारी उपक्रमों को निजी मोड में परिवर्तित करना ताकि वे मुक्त बाजार से स्पर्द्धा कर सकें। उदाहरण के तौर पर महानगरों के टेलीफोन सेवा को महानगर टेलीफोन लिमिटेड निगम (एम.टी.एन.एल.) तथा राष्ट्रव्यापी टेलीफोन सेवा को भारत सेवा निगम लिमिटेड (बी.एस.एन.एल.)में परिवर्तित किया जाना उल्लेखनीय है। इतना ही नहीं विदेशी एवं देशी फोन सेवा वाले कम्पनियों को भारत में ऑपरेट करने की अनुमति तथा निजी कम्पनियों में को संचार स्पेक्ट्रम को लीज पर देना। ये सभी सुधार आज भी जारी हैं।

नई आर्थिक व्यवस्था के परिणाम :–

क. वृद्धि दर में बढ़ोत्तरी –सबसे बड़ा लाभ तो यह हुआ कि भारत के जी.डी.पी. (सकल घरेलु उत्पाद) में आशातीत वृद्धि हुई। 1990 की दशक में जो वृद्धि दर 5 से 5.7 प्रतिशत थी वह 2000–01 में बढ़ कर 6.9 प्रतिशत हो गया। अंतराष्ट्रीय पटल पर भारत विश्व के सर्वाधिक वृद्धि दर वाले प्रथम पांच देशों में गिना जाने लगा। बाद में 2010–11 में यह वृद्धि दर 8.7 प्रतिशत हो गई।

ख. देश में गरीबी के दर में भी गिरावट आई। जहां 1993–94 में भारत की गरीबी दर 37 प्रतिशत थी वह 2010–11 में घटकर 32 प्रतिशत तथा मल्टीडायमेंशनल पावर्टी रेट 2014–15 में घटकर 29.7 प्रतिशत आ गई।

ग. स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार आया। जहां 1980 में लॉन्गीविटी दर 53 वर्ष थी वह बढ़कर 2011 में 64.7 वर्ष हो गई। साक्षरता दर एवं तकनीकी शिक्षा में भी काफी वृद्धि हुई।

घ. भारत को वित्तीय संकट से भी छुटकारा मिला। जहां विश्व 2008 मे आथिक मंदी के दौर से गुजर रहा था वहीं भारत पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा। इतना हीं नहीं भारत के पास विदेशी मुद्रा के रूप में 282 बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर हो गया। भारत पर से ऋण का भार भी कम हो गया। 2012 तक भारत का विदेशी ऋण घटकर इसके जी.डी.पी. का 18 प्रतिशत ही रह गया।

समालोचना– प्रणव बर्द्धन, अतुल कोहली, यास मुई आदि विद्वानो ने आर्थिक सुधारों के राजनीतिक पक्ष का विश्लेषण किया है। उनकी मान्यता है कि अंतराष्ट्रीय आवश्यकताओं एवं राष्ट्रीय राजनीति में शासन क्षमतां तथा मध्य वर्ग के सहयोग से आर्थिक सुधार सफल हुआ। वर्तमान समय में इन आर्थिक सुधारों का प्रबंधन अच्छा हो और लोगों को पर्याप्त रोजगार मिले तो भारत विश्व की आर्थिक मंदी ग्रसित नहीं होगा। पिछले दिनों नोटबंदी के कारण असंगठित क्षेत्र के कामगारों को बहुत क्षति हुई। वर्तमान समय में कोरोना संकट के कारण भारत की अर्थ व्यवस्था ठप सी पड़ गई है। अब देखना होगा कि इस संकट से उबरने के बाद आर्थिक नीति में क्या परिवर्तन लाया जाता है।

विषय पर सम्भावित प्रश्न

1. भारत में आर्थिक सुधारों का वर्णन करते हुए इसके प्रभावों का चित्रण करें।
2. भारत में नयी आर्थिक व्यवस्था पर निबंध लिखें

कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

– भारत में भुमण्डलीकरण के बाद औपचारिक रूप से आर्थिक सुधार कब लाये गये? – 1991

– भारत में सकल घरेलु उत्पाद में वृद्धि दर 1990 की दशक में कितनी थी और 2000–01 में कितनी हो गई?

– निम्नलिखित मे से कौन तत्व भारत में 1991 में लाये गये आर्थिक सुधारों से संबंधित नहीं है

अ. निजीकरण ब. उदारीकरण स. विदेशी ऋण में वृद्धि द. निजी क्षेत्र को सहायता